Topic 68

यङन्तप्रक्रिया

धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् ।

पौनःपुन्ये भृशार्थे च द्योत्ये धातोरेकाचो हलादेर्यङ् स्यात् ।

गुणो यङ्लुकोः ।

अभ्यासस्य गुणो यङि यङ्लुकि च । ङिदन्तत्वादात्मनेपदम् । अकोभूयिष्ट । पुनः पुनः अतिशयेन वा भवति - बोभूयते । बोभूयाञ्चक्रे ।

क्रिया के पुनः पुनः अथवा अधिक होने के अर्थ में हलादि और एकाच् धातु से विकल्प से 'यङ्' प्रत्यय होता है। इस सूत्र के प्रयोग के लिए तीन बातें आवश्यक है —

(1) क्रिया का प्रयोग पुनः पुनः अथवा अधिक होने के अर्थ में होना चाहिए।

(2) धातु के आदि में कोई व्यंजन - वर्ण होना चाहिए।

(3) धातु में केवल एक ही स्वर होना चाहिए।

यङ् में ङकार इत्संज्ञक है, अतः केवल 'य' ही शेष रह जाता है। उदाहरण के लिए 'भू' धातु हलादि है और इसमें एक ही अच् - अकार है। अतः प्रकृत सूत्र से पुनः पुनः या भृशार्थ में इससे यङ् होकर 'भू य' रूप बनता है। यहाँ 'सन्यङोः' से 'भू' को द्वित्व होकर 'भू भू य' रूप बनता है। इस स्थिति में सूत्र गुणो यङ्लुकोः प्रवृत्त होता है।

नित्यं कौटिल्ये गतौ ।

गत्यर्थात् कौटिल्य एव यङ् स्यात्, न तु क्रियासमभिहारे ।

दीर्घोऽकितः ।

अकितोऽभ्यासस्य दीर्घो यङि यङ्लुकि च । कुटिलं व्रजति - वाव्रज्यते ।

यस्य हलः ।

यस्येति संघातग्रहणम् । हलः परस्य यशब्दस्य लोप आर्धधातुके । आदेः परस्य - अतो लोपः बाभ्रजाञ्चके । बाभ्रजिता ।

रीगृदुपधस्य च ।

ऋदुपधस्य धातोरभ्यासस्य रीगागमो यङि यङ्लुकि च । वरीवृत्यते । वरीवृताञ्चके । वरीवृतिता ।

क्षुभ्नादिषु च ।

णत्वं न । नरीनृत्यते । जरीगृह्यते ।

'क्षुभ्ना' शब्दों के विषय में नकार के स्थान पर णकार नहीं होता है। उदाहरण के लिए पुनः पुनः या भृशार्थ में 'नृत्' धातु से यङ् । होकर 'नृत् य' रूप बनता है, तब पूर्ववत् द्वित्व, अभ्यासकार्य और रीक् आदि होकर नरी - नृत्य रूप बनता है। इस स्थिति में लट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में आत्मनेपद प्रत्यय 'त', शप्, पर-रूप और एत्व होकर 'नरीनृत्यते' रूप बनता है। यहाँ अट्कुप्वाङ्नुम् - ० से णत्व प्राप्त होता है, किन्तु 'नृत्' धातु के क्षुभ्नादिगण में पठित होने के कारण प्रकृत सूत्र से उसका निषेध हो जाता है। इस प्रकार 'नरीनृत्यते' रूप सिद्ध होता है।